रजिस्ट्री सं० डी०(डी०)-72 REGISTERED No. D. (D.)-72

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 24] नई दिल्ली, सोमवार, जनवरी 26, 1981/माघ 6, 1902
No. 24] NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 26, 1981/MAGHA 6, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त मंत्रालय
(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जनवरी, 1981

सं० 21021/11/80-प्रशा०-III:—राष्ट्रपति जी, गणतन्त्र दिवस, 1981 के अवसर पर केन्द्रीय उत्पादनशुल्क विभाग के निम्नलिखित अधिकारी को, उनकी असाधारण प्रशंसनीय सेवा के लिए जो उन्होंने अपने जीवन को भी जोखिम में डालकर की, यह प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम और ओहदा:—

श्री के०एन०आर० एन्टी, केन्द्रीय उत्पादनशुल्क अधीक्षक, जो बम्बई स्थित राजस्व गुप्तचर्या निदेशालय में आसूचना अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।

जिन सेवाओं के लिए प्रमाण-पत्र दिया गया है, उनका विवरण:

20 मई, 1980 की रात को, राजस्व गुप्तचर्या निदेशालय के प्रधान कार्यालय से प्राप्त दो सूचनाओं पर कार्यवाही करने के लिए वरिष्ठ आसूचना अधिकारी श्री के०एस०आर० एन्टी को चार आसूचना अधिकारियों के साथ बम्बई हवाई अड्डे पर तैनात किया गया था। ये सूचनाएं विदेश से आने वाले कुछ ऐसे व्यक्तियों से संबंधित थी, जिनके द्वारा निषिद्ध माल लाए जाने का संदेह था। हवाई अड्डे पर सहायक निदेशक श्री एस०एस० सेखों भी, जो दिल्ली से रात के लगभग दो बजे पहुंचे, श्री एन्टी के नेतृत्व में उक्त सूचना पर कार्यवाही करने वाले अधिकारियों के दल में शामिल हो गए। अपना तात्कालिक कार्य पूरा करने के बाद उक्त अधिकारी, 21 मई को प्रातः लगभग 6 बजे हवाई अड्डे से लौट आए क्योंकि संदिग्ध व्यक्ति आए ही नहीं। अन्य अधिकारियों को रास्ते में उतारने के बाद, श्री सेखों और श्री एन्टी, ड्राइवर श्री आर०जी० पाटिल द्वारा चलाई जा रही विभाग की जीप एम०आर०एच० 5867 में, दक्षिणी बम्बई स्थित अपने कार्यालय की ओर जा रहे थे।

2. श्री सेखों जीप की अगली सीट पर और श्री एन्टी पिछली सीट पर बैठे थे। जब उनकी जीप बान्द्रा क्षेत्र के स्वामी विवेकानन्द रोड से (जो पहले घोड़ बन्दर रोड के नाम से जानी जाती थी) जा रही थी कि तभी श्री एन्टी ने अपनी ओर आते हुए एक काली एम्बेसेडर कार देखी, जो संदिग्ध अवस्था में बड़ी तेज गति से चलाई जा रही थी। उन्होंने यह भी देखा कि कार की पिछली सीट पर टाट में लिपटे बहुत सारे पैकेट, जिन्हें तस्करों की भाषा में "भोज" कहते हैं, रखे हुए थे। श्री एन्टी ने इन सब तथ्यों की सूचना श्री सेखों को दी, जो अगली सीट पर बैठे होने के कारण उस कार को नहीं देख सकते थे। इसी बीच, कार जीप से आगे निकल गई और श्री सेखों ने भी उन पैकेटों को देख लिया।

3. यह सब देख कर इन दोनों अधिकारियों की तस्करी-विरोधी सहज प्रवृत्ति सक्रिय हो उठी और श्री सेखों ने ड्राइवर को जीप की गति बढ़ाकर उस कार का पीछा करने के लिए कहा। कार के ड्राइवर के यह महसूस करने पर कि उसका पीछा किया जा रहा है, कार की गति और तेज कर दी जिसके परिणामतः जीप को भी अपनी गति बढ़ानी पड़ी। इसके अलावा, कार की गति बढ़ जाने से इन अधिकारियों के, शुरू शुरू में हुए, उस संदेह की पुष्टि हो गई कि कार में जो कुछ ले जाया जा रहा है वह कोई निषिद्ध माल है। इसलिए उन्होंने कार को रोकने का आदेश

दिया, परन्तु इस निर्देश का पालन करने की बजाए, कार, बच निकलने के उद्देश्य से, बांई ओर, बांद्रा रेलवे स्टेशन को जाने वाली सड़क पर, मुड़ गई। जीप ने भी उसी दिशा में उसका पीछा किया। अन्त में वह कार पुनः स्वामी विवेकानन्द रोड पर आ गई लेकिन वह दक्षिण की ओर जाने वाले अपने पहले वाले रास्ते की बजाए उत्तर की ओर मुड़ गई। उस समय, श्री एन्टी कार पर गोली चलाने के लिए सहायक निदेशक से अनुमति लेकर पिस्तौल निकालने के लिए अपना बैग खोलने लगे। तब तक जीप कार से लगभग आगे निकल ही चुकी थी कि उसी क्षण कार ने बांयी ओर से जीप को अचानक टक्कर मारी जिसके परिणामतः ड्राइवर जीप पर से नियंत्रण खो बैठा और जीप दायीं ओर पटरी पर चढ़ गई तथा एक दीवार को टक्कर मारते हुए बिजली के एक खम्बे से जा टकरायी और उलट गई। श्री एन्टी जो पिछली सीट पर बैठे थे कार से बाहर जा गिरे और उनकी दायीं टांग बुरी तरह जख्मी हो गई। इसी दौरान वह कार भाग निकली।

4. इस आघात से सम्भलने पर श्री सेखों ने, उलटी हुई उस जीप में, ड्राइवर को अपने ऊपर पाया। जैसे तैसे दोनों बाहर निकले और श्री सेखों ने देखा कि श्री एन्टी अपनी दायीं टांग पकड़े पटरी पर बैठे हैं और उनकी टांग में से, टखने के ऊपर से, बहुत खून बह रहा है। यद्यपि श्री सेखों को भी अपने शरीर पर बाईं ओर बहुत चोटें आई थीं, फिर भी उन्होंने स्वयं को सम्भाले रखा और अपनी पगड़ी उतार कर श्री एन्टी की टांग पर बांध दी ताकि और खून नहीं बहे। उन्होंने एक टैक्सी रोक कर श्री एन्टी को उठाकर उसमें बैठाया और उन्हें बिले पारले स्थित नानावती अस्पताल ले गए। उन्होंने ड्राइवर को बान्द्रा पुलिस स्टेशन जाकर दुर्घटना की रिपोर्ट दर्ज करवाने और उसके बाद नानावती अस्पताल आने की हिदायत दी।

5. सामान्य परिस्थितियों में, इस प्रकार की कार्यवाही करने के लिए, अधिकारीगण, पीछा करने और अन्य सम्भावित घटनाओं के लिए, पूरी तरह तैयार होकर जाते हैं। ये अधिकारी कार को एक बार देखते ही, उसका पीछा कर उसे रोकने के काम में लग गए। यह दुर्भाग्य ही था कि जीप दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिससे इन अधिकारियों के हाथ से, निषिद्ध माल सहित कार को रोकने का मौका निकल गया। श्री एन्टी की एक टांग जाती रही और बदकिस्मती से वह सदा के लिए अपंग हो गए।

6. यद्यपि श्री एन्टी इस घटना के पिछले दिन भी काम करते रहे थे और उन्हें सारी रात जागना पड़ा था, फिर भी उन्होंने उस कार का पीछा किया जो उन्होंने कार्यालय की ओर जाते समय देखी थी। साधारण चरित्र बल के अधिकारियों ने इसी आधार पर ही इस कार को नजरअन्दाज कर दिया होता और उस कार का पीछा करने में सुस्ती दिखाई होती कि वे लगातार चौबीस से ज्यादा घण्टों तक काम करते रहे थे। यात्रा के दौरान इन अधिकारियों ने जो कुछ देखा था, उसके सम्बन्ध में यदि वे कुछ नहीं बताते तो भी उच्च अधिकारी उन्हें कुछ नहीं कहते, फिर भी इस तथ्य से उनकी सतर्कता का पता चलता है कि उन्होंने कार को देखा, और इस तथ्य से उनकी उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय मिलता है कि उन्होंने कार का पीछा करने का फैसला किया। प्रयोजनार्थ उस कार का एक ऐसी जीप द्वारा पीछा करने में, जो इस पूर्णतया लैस नहीं थी, ग्रस्त जोखिम की इन अधिकारियों को पूरी जानकारी के बावजूद उन्होंने कार को रोकने के उद्देश्य से उसका पीछा किया। अधिकारियों द्वारा अपने कर्तव्य का निस्संकोच एवम् सहज निर्वाह किए जाने से उनकी उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का पता चलता है और इसके लिए वे असाधारण प्रशंसा के पात्र हैं।

7. इस प्रकार श्री एन्टी ने उक्त कार का पीछा करने में उस समय पूरी तरह लैस न होने के बावजूद अपने जीवन को भरे जोखिम में डालकर असाधारण प्रशंसनीय कार्य किया है।

8. पहले भी कई बार श्री एन्टी ने अपना कर्तव्य निभाने में विशिष्ठ साहस का परिचय दिया था।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th January, 1981

No. 21021/11/80-Ad. HIB.—The President is pleased, on the occasion of Republic Day, 1981, to award an Appreciation Certificate to the undermentioned officer of the Central Excise Department for exceptionally meritorious service rendered by him when undertaking a task even at the risk of his life.

Name of the Officer and rank

Shri K. N. R. Entee, Superintendent of Central Excise functioning as Intelligence officer in the Directorate of Revenue Intelligence at Bombay.

Statement of services for which the certificate has been awarded.

On the night of 20th May, 1980 Senior Intelligence Officer, Shri K.N.R. Entee was depoted to the Bombay airport along with four intelligence officers to work out two piece of intelligence received from the Hqrs. of the Directorate of Revenue Intelligence regarding the arrival from abroad of some persons who were suspected to be carrying contraband. At the airport, Assistant Director Shri S.S. Sekhon, who arrived from Delhi around 2.00 a.m. also joined the party of officers led by Shri Entee who were working out the information. On completion of their immediate assignment the officers withdrew from the airport at about 6 a.m. on 21st May because the suspects did not turn up. After dropping the other officers on the way, S/Shri Sekhon and Entee were proceeding towards their office in South Bombay in departmental jeep MRH 5867 driven by driver Shri R. G. Patil.

2. Shri Sekhon was sitting in the front while Shri Entee was at the back seat. The jeep was moving on Swami Vivekananda Road (previously known as Ghode Bunder Road) in the Bandra area when Shri Entee spotted a black Ambassador car approaching them and being driven very fast in suspicious manner. He also observed that a number of packageswrapped in gunny, which in the local language of smugglers are called "Bhojas" were kept on the back seat of the car. Shri Entee reported these facts to Shri Sekhon who was not able to see the car because he was sitting in the front. Meanwhile, the car overtook the jeep and, by then, Shri Sekhon also noticed the packages.

3. At this, the preventive instinct of both the officers came to the fore and Shri Sekhon asked the driver to speed up the jeep and follow the car. On feeling that he was being followed, the driver of the car further accelerated with the result that the jeep also had to increase its speed. Moreover, the speeding up of the car confirmed the initial suspicion of the officers that what it was carrying was contraband. They, therefore, ordered it to stop, but instead of complying with this direction, the car turned towards the left on the road to the Bandra Railway Station with a view to giving it a slip. The jeep also followed in the same direction. The car finally re-entered Swami Vivekananda Road but, instead of proceeding to its original course to the south, it turned northwards. At this stage, Shri Entee sought permission of the Assistant Director to fire at the car and started opening his bag for taking out his revolver. By then the jeep had almost overtaken the car and at that moment the latter suddenly hit the jeep from the right as a consequence of which the driver lost control and mounted the pavement on the right and hit a wall and overturned on striking against an electric pole. Shri Entee, who was sitting at the back got thrown out and seriously injured his right leg. Meanwhile, the car speed away.

4. When Shri Sekhon recovered from the shock he found the driver resting on his body in the overturned jeep. After they managed to get out, Shri Sekhon noticed Shri Entee on the pavement holding his right leg which was profusely bleeding above the ankle. Although he had himself received injuries on the left side of his body, Shri Sekhon kept his presence of mind and took off his turban and tied it on Shri Entee's leg to prevent further bleeding. He stopped a taxi and lifted Shri

Entee and took him to the Nanavati Hospital in Vile Parle. He instructed the driver to go to the Bandra Police Station and lodge a report of the accident and then come to the Nanavati Hospital.

5. In the normal circumstances for an operation of this nature, the officers go fully prepared for a chase and other eventualities. These officers having once spotted the car undertook the mission of chasing and intercepting it. It was unfortunate that the jeep met with an accident which deprived them the opportunity of intercepting the car with the contraband. Shri Entee was unlucky to have suffered a permanent disability by way of loss of his leg.

6. The fact that Shri Entee had worked during the previous day and kept awake during the night did not deter him from chasing the car which he had noticed during their journey to the office. Officers of ordinary calibre would have ignored the car on the simple ground that they had continuously been working for over 24 hours and would have therefore felt lethargic to chase it. The fact that they observed the car shows alertness; the fact that they decided to chase it shows their extreme devotion to duty, even though no superior officer would have called them into question if they had not reported what they had noticed while travelling. The risk inherent in chasing the car with a jeep which was ill equipped for the purpose was apparently known to the officers and, inspite of this knowledge they chased the car with a view to intercepting it. The spontaneous response on the part of the officers to the call of duty without hesitation shows their extreme devotion to duty and merits exceptional appreciation.

7. Thus Shri Entee has rendered exceptionally meritorious service in the task of chasing the car although ill-equipped at that moment, even at the risk of his life.

8. On some earlier occasions also Shri Entee had displayed outstanding courage in discharging his functions.

सं० 21021/11/80-प्रशा०-III ख

राष्ट्रपति जी, गणतन्त्र दिवस, 1981 के अवसर पर, नारकोटिक्स विभाग के निम्नलिखित प्रत्येक अधिकारी को उनकी असाधारण प्रशंसनीय सेवा के लिए, जो उन्होंने अपने जीवन को भी जोखिम में डाल कर की, यह प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान करते हैं।

अधिकारियों का नाम और ओहदा

1. स्वर्गीय श्री सतगुरु लाल, निरीक्षक, केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो।

2. स्वर्गीय श्री रामनौमी, चालक, केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो।

जिन सेवाओं के लिये प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये, उनका विवरण।

स्वर्गीय श्री सतगुरु लाल निरीक्षक ने, 25-4-80 को एक महत्वपूर्ण सूचना पर कार्यवाही करने के लिए, 4 अधिकारियों और चालक श्री रामनौमी की एक टीम संगठित की। श्री सतगुरु लाल ने अपनी टीम के साथ लखनऊ-कानपुर मार्ग पर संदिग्ध वाहन के बारे में लगातार 3 दिन तक निगरानी रखी। अपनी टीम के लिए दृढ़ता के प्रतीक और प्रिय नेता के रूप में श्री लाल ने निरन्तर निगरानी की व्यवस्था की और 28-4-80 को प्रातः उक्त टीम ने, लखनऊ-कानपुर मार्ग पर सरोजनी नगर के समीप संदिग्ध जीप देखी और उसे रुकने का संकेत किया, परन्तु यह जीप कानपुर की तरफ बचकर निकल भागने की कोशिश में और तेज हो गई। सतर्क, दक्ष तथा मुस्तैद श्री सतगुरु लाल ने उस जीप का पीछा करने की कमान सम्भाली, जिसमें चालक ने भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संदिग्ध जीप का पीछा अन्धाधुन्ध गति से किया गया और उक्त टीम बन्थरा के पास उस वाहन को जो पकड़ने में सफल हुई। जीप की तलाशी लेने पर, जीप में एक गुप्त स्थान पाया गया जिसका इस्तेमाल तस्करी के लिये किया जाता था। जीप में बैठे दोनों व्यक्तियों को गिरफ्तार करने के साथ-साथ जीप में से एक लाख रुपये मूल्य की 96.900 किलोग्राम निषिद्ध अफीम के 51 पैकेज बरामद हुए। श्री राम नौमी ने, जीप में तस्करी के लिये प्रयुक्त गुप्त स्थान को ढूंढने में अपनी सहज बुद्धि, आलौकिक कुशलता का परिचय दिया।

पूर्वोक्त सफलता के बाद, श्री लाल को, उसी दिन बाराबंकी जिले के मेहंदीपुर गांव से एक ट्रक द्वारा बड़े पैमाने पर की जाने वाली तस्करी विषयक सूचना पर अनुवर्ती कार्यवाही करने के लिए, एक टीम का चार्ज दिया गया। उक्त सूचना के अनुसरण में दल ने गांव के चारों ओर कड़ी निगरानी रखनी शुरू कर दी। श्री लाल के नेतृत्व में, दल के सदस्यों ने बाराबंकी के भीतरी भाग में, जो तस्करों का बड़ा गढ़ है, अपनी सुरक्षा की चिन्ता किए बिना और अधिक उत्साह से निगरानी रखी। श्री लाल ने, अपने स्थान के आसपास कुछ गतिविधि देख कर यह महसूस करते हुए कि उनकी घात के बारे में पता लग चुका है, किसी अन्य स्थान को कूच करने का आदेश दिया। उन्होंने दिनांक 29-4-80 को आधी रात 1.30 बजे उक्त गांव छोड़ दिया और बाराबंकी चुंगी की ओर चल दिये। यहीं इस टीम को दो कारों एक हरी और एक सफेद द्वारा अफीम की अवश्यंभावी तस्करी के संबंध में एक और सूचना मिली। दिनांक 29-4-80 को रात लगभग दो बजे ही इस टीम ने हरे रंग की एक कार लखनऊ की ओर जाती देखी। कर्तव्य के प्रति अपने अथक उत्साह, दृढ़ निष्ठा और अनुकरणीय कर्तव्यपरायणता से युक्त श्री लाल ने टीम को उस हरी कार का पीछा करने का आदेश दिया। श्री लाल के योग्य नेतृत्व में और श्री राम नौमी के कुशलतापूर्वक वाहन चलाने से विभागीय अधिकारियों ने भागती कार का 120 कि० मी० प्रति घण्टे की अंधाधुंध रफ्तार से पीछा किया।

यह जानते हुए भी कि वे आततायियों का पीछा कर रहे हैं और अंधेरे में इतनी तेजी रफ्तार से पीछा करना भारी जोखिम का काम है, टीम के शांत और गम्भीर नेता श्री लाल लगभग 12 कि० मी० तक पीछा करते रहे। एक बार तो तस्करों के ड्राईवर ने चकमा देकर उन्हें आगे भी निकल जाने दिया परन्तु बाद में रुकने के लिए कहे जाने पर रफ्तार तेज कर दी। तस्करों की कार और विभागीय कार के एक ट्रक के साथ दुर्घटना ग्रस्त हो जाने पर, तेज रफ्तार से किया जा रहा पीछा खत्म हुआ जिसमें टीम के नेता श्री सतगुरु लाल की और ड्राईवर श्री राम नौमी की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। शेष कर्मचारियों ने, जिन सबको चोटें आई थीं, तस्करों का ड्राईवर पकड़ लिया और तलाशी के परिणामतः अवैध व्हिस्की की 99 बोतलें पकड़ी गयीं जिन्हें तस्करी द्वारा निषिद्ध क्षेत्र में ले जाया जा रहा था।

No. 21021/11/80-Ad. IIIB.—The President is pleased, on the occasion of Republic Day, 1981, to award an Appreciation Certificate to each of the undermentioned officers of the Narcotics Department for exceptionally meritorious service rendered by them when undertaking a task even at the risk of their lives :—

Names of the officers and rank.

1. Late Shri Satgur Lal, Inspector in the Central Bureau of Narcotics.

2. Late Shri Ram Naumi, Driver in the Central Bureau of Narcotics.

Statement of services for which the certificates have been awarded.

On 25-4-80 Late Shri Satgur Lal, Inspector organised a task force consisting of 4 officers and Driver Shri Ram Naumi for working out a valuable information. Shri Satgur Lal alongwith his team kept a vigil on Lucknow-Kanpur road continuously over the suspected vehicle for three days. A symbol of perseverence and beloved leader to his team, he arranged the prolonged surveillance and in the morning of 28-4-80 the team located and signalled the suspected jeep near Sarojni Nagar on Lucknow-Kanpur Road but it speeded up and tried to escape towards Kanpur. Alert, agile and prompt as Shri Lal was, he took command of the chase in which the driver.

played an equally important role. The suspected jeep was chased with break-neck speed and the team overtook the fleeing vehicle near Banthara. After the search of the jeep a cavity in the jeep used for smuggling was found. 51 packages of contraband Opium weighing 96.900 kgs valued at Rs. one lakh recovered apart from the arrest of both the occupants of jeep. Shri Ram Naumi demonstrated his instinct and uncanny skill to locate concealed cavaties in the jeep used for smuggling.

After the aforesaid successful mission Shri Lal was again made incharge of a team the same day to follow up information of a large scale smuggling on a truck from the village Mehdipur District Barabanki. In pursuance to the information the party started keeping discreet watch around the village. The members of the team led by Shri Lal kept the vigil with renewed vigour with least concern for their safety deep in the interior stronghold of smugglers of Barabanki. On seeing some activity around their position Shri Lal, sensing that their ambush has been exposed, ordered a strategical withdrawal to another place. They left the village at 1.30 A.M. on 29-4-80 and moved to Barabanki octroi. Here the party received another information regarding imminent smuggling of opium by two cars—one of green colour and another of white colour. Just at about 2 A.M. on 29-4-1980 the team noticed a green coloured car fleeing towards Lucknow. Shri Lal with his untiring zeal, unflinching devotion and exemplary dedication to duty, ordered the team to follow the green car. The departmental officials under the able leadership of Shri Lal and expert driving by Shri Ram Naumi gave a chase to the fleeing car at the break-neck speed of 120 K.M. ph.

Despite his knowing that they were after desperados, and there was a grave risk involved in chasing in dark night at such high speed, the calm and composed leader of the team Shri Lal kept up the chase for about 12 kms. At one stage the smuggler's driver even hoodwinked them and allowed them to overtake but later speeded up on being asked to stop. The high speed chase ended in the smuggler's car and Departmental car meeting with an accident with a truck in which the leader Shri Satgur Lal died on the spot as also the driver Shri Ram Naumi. The smuggler's driver was overpowered by rest of the staff, all of whom had injuries, and the search resulted in seizure of 99 bottles of contraband whisky, being smuggled into a prohibited zone.

सं० ए-21021/11/80-प्रशा०-III ख.—राष्ट्रपति जी, गणतंत्र दिवस 1981 के अवसर पर सीमाशुल्क विभाग के निम्नलिखित अधिकारियों में से प्रत्येक को उसकी उल्लेखनीय विशिष्ट सेवा के लिए प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान करते हैं:—

1. श्री बालकृष्ण बीडकर, सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक) बम्बई।
2. श्री शिरावले एम० महीपत, सिपाही, सीमाशुल्क (निवारक) बम्बई।

2. ये पुरस्कार सीमाशुल्क और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों को पुरस्कार देने संबंधी समय-समय पर यथा संशोधित उस योजना के पैरा 1 के खण्ड (क) (ii) के अन्तर्गत दिये जाते हैं, जो भारत के राजपत्र, असाधारण के भाग I, खण्ड 1, में अधिसूचना सं० 12/139/59-प्रशा०-III ख, दिनांक 5 नवम्बर, 1962 के अन्तर्गत प्रकाशित की गयी थी।

आर० सी० मिश्रा, अपर सचिव

No. A. 21021/11/80-Ad. IIIB.—The President is pleased, on the occasion of the Republic Day, 1981, to award an Appreciation Certificate for Specially Distinguished Record of Service to each of the under-mentioned officers of the Customs Department :—

(1) Shri Balkrishna M. Bidkar,
Superintendent of Customs (Preventive),
Bombay.

(2) Shri Shiravale M. Mahipat,
Sepoy, Customs (Preventive),
Bombay.

2. These awards are made under clause (a) (ii) of para 1 of the Scheme governing the grant of awards to the officers and staff of the Customs and Central Excise Departments, published in Part I, Section 1 of the Gazette of India Extraordinary Notification No. 12/139/59-Ad. IIIB, dated the 5th November, 1962, as amended from time to time.

R. C. MISRA, Addl. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054, 1981